जम्मू और कश्मीर

अरुणोदय जरूर होगा

राजगोपाल पी० वी०
डा० अब्बास एस० एम०
रमेश शर्मा

गांधी शांति प्रतिष्ठान
नई दिल्ली

जम्मू कश्मीर का आंखों देखा हाल

गांधी शांति प्रतिष्ठान की ओर से २५ मार्च से ३१ मार्च १९९६ तक एक टोली जम्मू कश्मीर यात्रा पर रही। टोली का नेतृत्व गांधी शांति प्रतिष्ठान के मंत्री श्री राजगोपाल पी.वी. ने किया डा० एस० एम० अब्बास एवं रमेश शर्मा भी टोली में शामिल थे।

टोली के सामने मुख्य रूप से निम्न उद्देश्य रहे :-

१. गांधी परिवार के वरिष्ठ सदस्यों के अध्ययन दल के बाद जम्मू कश्मीर में निरन्तर संपर्क बनाए रखना तथा उसकी स्थिति का जायजा लेना:

२. प्रस्तावित सद्भावना यात्रा के लिये सम्भावना, मार्ग, निवास आदि व्यवस्थाओं को तलाशना। प्रस्तावित सद्भावना यात्रा में देशभर से विभिन्न प्रांतों के ५०–६०प्रतिशत साथी भाग लेंगें।

३. चुनाव घोषणा के बाद की स्थिति का जायजा लेना तथा चुनाव के दौरान गांधी परिवार के संगठनों एवं व्यक्तियों की भूमिका की संभावनाओं को तलाशना।

२५ मार्च को टोली ने दिल्ली से रेलमार्ग द्वारा यात्रा प्रारंभ की। २६ मार्च को गांधी निधि के कार्यकर्ताओं से संपर्क कर उसी दिन टोली श्रीनगर के लिए सड़क मार्ग से चल पड़ी। २६ मार्च की रात बनीहाल होटल में ठहरे। २७–२८ मार्च को श्रीनगर में रहे। २९ को जम्मू के लिए सड़क मार्गसे यात्रा प्रारम्भ की २९ मार्च को फिर बनीहाल रुकना पड़ा। ३० मार्च को जम्मू पहुंचे तथा रेल द्वारा ३१ मार्च को दिल्ली। इस मध्य टोली ने वहां के विभिन्न तबकों के लोगों युवा वर्ग, कश्मीरी पंडित, खादीकार्यकर्ता, राजनैतिक नेता, पत्रकार समुदाय, व्यापारी आम नागरिक, सरकारी कर्मचारी तथा मानवाधिकार कार्यकर्ताओं आदि से संपर्क, बातचीत की।

जम्मू से

जम्मू पहुंचने पर जानकारी प्राप्त हुई कि जम्मू–श्रीनगर के मध्य सड़क वैकल्पिक दिनों पर अर्थात् एक ओर से एक दिन वाहन चलाने के लिए खोली जाती है। वर्षा के कारण सड़क जगह जगह पर टूट गई है। अनेक स्थानों पर भूस्खलन के कारण सड़क खराब थी। स्थान स्थान पर बुलडोजर आदि मशीनें सड़क साफ करने के लिए तैयार खड़ी हैं। यहां की सड़क की जुम्मेवारी "बीकन" संभालता है। यात्रा के लिए रास्ता आदि भी देखना, समझना था इसलिए सड़क मार्ग से ही यात्रा करना उपयोगी समझा गया। २६ मार्च को दोपहर मीनीबस से जम्मू से श्रीनगर के लिए प्रस्थान किया। बस में बड़ी संख्या में मुस्लिम भाई थे। बस में महिलाएं एवं तीन बच्चे भी शामिल थे। हिन्दू गिने चुने थे। प्रारंभ में बस दो घंटे बहुत तेजी से चली और फिर धीरे–धीरे चढ़ाई बढ़ती गई और गति कम होती गई। रास्ते में कहीं गहन हरियाली आई मगर कई स्थानों पर नंगे पहाड़ भी नजर आए। वर्षा के मौसम के कारण यहां वहां झरने भी बहते नज़र आए। यातायात सड़क पर कम नजर आ रहा था। प्रातः ही ज्यादातर बसें आदि जम्मू से चली गई थी। जिस बस में हम बैठे उस बस में सवारियां प्रातः १० बजे से बैठी थीं और बस चलने का इंतजार कर रही थी। बस चली दोपहर १.३० बजे के बाद जब सवारियां पूरी हो गई। नगरोटा, उधमपुर, कूद, बटोती, गोपालगढ़, रामवन, रामसू होती हुई बस रात को बनीहाल पहुंची। बनीहाल शाम से पहले पहुंच जाते तो जवाहर गुफा पार की जा सकती थी। बनीहाल से थोड़ी दूर चढ़ाई चढ़ कर जवाहर गुफा है। जम्मू से ही बस दोपहर बाद चली फिर भी बस के ड्राईवर आदि कहते रहे कि आज ही श्रीनगर पहुंच जायेंगे। प्रारंभ में दो घंटे उसने गाड़ी खूब तेज़ चलाई भी। चौड़ी सड़क,

यातायात कम, मोड़ भी बहुत ज्यादा नहीं। मगर जब आगे बढ़े तो चढ़ाई, मोड, सड़क की टूटन, भूस्खलन के साथ–साथ पुलिस ने बस को लम्बे रास्ते से भी जाने को कहा इस रास्ते से जाने पर कम से कम ३०–४० मिनट का समय ज्यादा लगता है।

लगभग ४ घंटे चलने के बाद ड्राईवर ने चाय के लिए बस रोकी। दो तीन छोटी–छोटी दुकानें। दुकानों के पीछे नदी का कोलाहल सुनाई पड़ रहा है। सामने दो छोटे–छोटे झरने बह रहे हैं। सवारी चाय की दुकान की ओर बढ़ी और चाय का आनन्द लेने लगी। टोली के दो सदस्यों ने भी चाय ली मगर तभी वापस रख दी क्योंकि चाय नमकीन थी। कश्मीर में नमक वाली चाय पीने की आदत है। दूसरी दुकान पर जाकर मीठी चाय बनवाई। सभी दुकानों पर विशेष तैयार रोटी जिसे लवासा कहते हैं उपलब्ध रहती है। हमने भी वह रोटी खाई। बस चल पड़ी । ठण्डक महसूस होने लगी। गर्म कपड़े की याद आने लगी। कहीं–कहीं बर्फ से ढ़की पहाड़ियां भी नजर आने लगी। बस चलती गई। कभी कभी कोई गांव नज़र आता है, मकान दूर दूर पहाड़ी पर। मकानों की बनावट भी अलग। सीढ़ीनुमा खेत भी नजर आते हैं। कुछ दूर तक देवदार, चीड़ के बड़े, ऊंचे पेड़ों की श्रृंखला नजर आती है। हरियाली का आनन्द अपना ही है। बस आगे चढ़ती जाती है और दृश्यों की श्रृंखला भी चलती जाती है।

गुफा के द्वार पर

रात को बस बनीहाल पहुंची हमने अपना सामान बस की छत से उतारा और फटाफट गर्म कपड़े पहने। हमारे साथ यात्रा कर रहे श्री मौहम्मद रमजान, श्री अब्दुल गफ़ार आदि ने हमारे रहने के लिए "कश्मीर गेट वे होटल" में व्यवस्था कर दी। जब तक हमने अपना सामान बस से उतारा। बड़े उत्साह के साथ

इन्होने निवास एवं भोजन की व्यवस्था की। हमें एक पंजाबी ढाबे में साथ ले गए तथा ढाबे में मालिक को हिदायत दी कि मेहमानों को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए इन्हें आराम से भोजन करवाना। कश्मीर की तहज़ीब का दर्शन, अपनेपन की चाह, अतिथि सम्मान की झलक। भोजन कर रहे थे कि फिर साथी आए पूछने कि किसी चीज की आवश्यकता तो नहीं है। भोजन के बाद हम लोग अपने रहने के कमरे में आये। सोये ही थे कि दरवाजे पर ज़ोर की दस्तक हुई। दस्तक की आवाज कुछ देर पहले पड़ौस से भी सुनी थी। दरवाजा खोला रात के १०.३० बजे होंगे। दो पुलिस वाले तथा होटल का एक लड़का दरवाजे पर खड़े थे। पुलिस वालों ने पूछा कहां से आए हैं? हमने बताया। उनसे पूछने पर उन्होनें बताया कि वे स्थानीय थाने से आए हैं। जल्दी ही इतनी सी बात के बाद उन्होंने कहा आप लोग सोइये और वे चले गए। बाद में मालूम हुआ कि पुलिस रात को चैक करती है। रात को ठण्डक तेज थी सुबह जल्दी उठे तैयार हुए। होटल के बगल में ही नदी बहती है। तेजधार के कारण आवाज खूब हो रही है। सुबह जल्दी ही चलना था। जहां बस खड़ी थी वहां तक घूमकर आए। ड्राईवर अभी तक सोया हुआ था, उसे जगाया। ७ बजे के लगभग बस चली और थोड़ी ही देर में जवाहर गुफा के पास जाकर बस रुक गई। तेज ठण्डी हवा के झोंके आ रहे हैं। सामने बर्फ से ढकी पहाड़ी। बर्फ को पास से देख रहे हैं। अनिश्चितता की स्थिति, न जाने कब गुफा खुलेगी? फौज एवं पुलिस के जवान नजर आ रहे हैं। एक फौज़ी अपनी बंदूक के साथ घूम रहा है। कुछ सवारी इधर उधर चहल कदमी में हैं। कुछ पूछताछ कर रही हैं कि गुफा कब खुलेगी? कुछ युवा, बच्चे खाने–पीने का सामान बेच रहे हैं। कुछ देर बाद ही यात्रियों में भगदड़ मची सब अपने–अपने वाहन की ओर दौड़े गुफा खोल दी गई थी। हमारी बस गुफा में दौड़ने लगी।

वादी की ओर

जवाहर गुफा द्वार है, वादिए कश्मीर में जाने का। जवाहर गुफा पार करते ही हम एक लम्बी घाटी में पहुंच जाते हैं। पहाड़ी की ऊंचाई, चढ़ाई सब देखने के बाद एक शानदार, जानदार घाटी के दर्शन होते हैं चारों ओर पहाड़ियां नजर आती हैं। बस चलने लगी। धीरे धीरे आगे बढ़ रही थी। नजर आ रही है वादिए कश्मीर हरीभरी, पहाड़ियों से घिरी, केसर की घाटी, सेब के बागानों से ओतप्रोत, बर्फीली चोटियों को संभालती, प्यार से झरने बहाती इस कश्मीर की वादी में जाने को लोग तरसते हैं। धरती पर स्वर्ग कहाने वाली यह घाटी आज खामोश, उदास क्यों हैं? जहां तहजीब, अमन, चैन की बंसी बजती थी, वहां आज बंदूके दनदनाती हैं। बंदूके कभी भी, कहीं भी खामोशी को तोड़ती हैं मगर दुर्भाग्य कि इससे खामोशी, उदासी और गहरा जाती है। क्या हुआ है घाटी को ?

बस घाटी में आगे बढ़ रही है। यातायात बढ़ रहा है। श्रीनगर की ओर से आने वाला यातायात श्रृंखलाबद्ध ढंग से आ रहा है। फौजी गाड़ियों की पंक्तिबद्ध कतारें एक साथ रास्ते में कई जगह देखी। हर वाहन पर बंदूकधारी तैयार हैं। हर शहर, कस्बे, गांव में जगह–जगह बैरक बने हैं। सशस्त्र जवान पहरे पर हैं। अनेक मकानों की छत पर सैनिक हथियारों के साथ खड़े हैं। बस्ती सीमा क्षेत्र बन गई लगती है। माहौल में एक खौफ, दहशत, तनाव नजर आता है। जिन्दगी सहमी हुई है। सैनिक बलों के वाहन इधर–उधर दौड़ते नजर आते हैं। घाटी की यह स्थिति देखकर स्वाभाविक रूप से डर, दहशत, भय, तनाव नजर आता है। एक ओर जीवन भी चलता नजर आ रहा है। महिला पुरुष अपने–अपने काम करते हुए नजर आए मगर सेना की उपस्थिति असामान्य स्थिति को

दर्शाती है। इस प्रकार–जवाहर गुफा, काजीगुंड, खनाबल, बिजवियारा, अवन्तीपुर पामपुर होते हुए श्री नगर पहुंचे।

श्रीनगर में

२७ मार्च दस बजे के लगभग का समय श्रीनगर में प्रवेश कुछ असामान्य स्थिति लग रही है। दुकाने अभी बंद हैं।, सड़कें सूनी हैं, बाज़ार बंद हैं। कहीं–कहीं लोग नजर आ रहे हैं। झेलम को पारकर हम लोग बस से उतरे और पैदल चलते हुए अहदूस होटल पहुंचे। अहदूस होटल के लिए बहुत कम चलना पड़ा।

गम के पल

जानकारी मिली की पिछले दो–दिन हड़ताल थी। आज हड़ताल खुलने वाली थी। दुकानें खुलने की तैयारी थी कि श्री जलील अंदराबी, एडवोकेट, मानवाधिकार कार्यकर्ता की लाश झेलम किनारे राजबाग के पास मिली है, इस समाचार के बाद आज हड़ताल जारी रही। श्री जलील अंदराबी पिछले १६ दिन से लापता थे। उनकी पत्नी ने पुलिस में रपट दर्ज करवाई थी कि राष्ट्रीय राईफल्स के जवान उन्हें शाम को घर आते समय उनकी मारूति से उनके सामने ही ले गए। श्रीनगर के एडवोकेट्स आदि ने हाईकोर्ट में भी मामला उठाया मगर १६ दिन में उनका कहीं पता नहीं चला और और आज उनकी लाश देखी गई बाज़ार आज भी नहीं खुले। पुलिस ने लोगों पर लाठी चार्ज किया। लाश थाने में रही। शाम को पुलिस ने लाश सौंपी। श्री जलील अंदराबी के घर के आसपास बहुत लोग एकत्र हो रहे थे। जगह–जगह झुंड बनाकर लोग लाश का इंतजार कर रहे हैं। अनेक स्थानीय नेता भी घर पर आ जा रहे हैं। हम लोग उनके घर पर गए। अपनी संवेदना व्यक्त की। २८ मार्च को दोपहर में ईदगाह मैदान में

श्री जलील अंदराबी को दफन किया गया। ईदगाह मैदान के एक कोने में सैकड़ों कब्रें बनी हैं। इसी प्रकार से मारे गए लोगों की यह कब्रें हैं। जिन्हे देखकर मन में तकलीफ पैदा होती है। इसी स्थान पर श्री जलील अंदराबी को भी दफन किया गया। दफन से पूर्व अनेक लोगो ने भाषण दिए हजारों लोग वहां एकत्र थे। श्री यासीन मल्लिक, श्री जावेदमीर, श्री अब्दुल गनी लोन आदि के भाषण हुए। जनाजे की नमाज़ अदा करने के बाद दफन की कारवाई की गई इस समय कुछ लोगो से बातचीत की। लोग दुःख में थे। "भारत सरकार बारबार बात पलटती है। उसे कश्मीर चाहिए कश्मीरीयतं नहीं, कश्मीर के लोग नहीं।" वादा खिलाफी का आरोप सरकार पर अनेक लोगों ने लगाया। एक वृद्ध बड़े गमगीन खड़े हैं उनसे बातें शुरू की उन्होनें कहा कि " हम दुआ करते है कि भारत का नाश हो"। यह कहने में उस वृद्ध के चेहरे के दुःख को आसानी से समझा जा सकता था। दूसरे व्यक्ति ने कहा " जिसकी ताकत है उसी के साथ लोग हैं"।

एक और हमला

२७ मार्च को अनेक पत्रकारों से, युवाओं से बातचीत का मौका मिला। श्री सैयद शाह जीलानी के निवास पर गए। इनका मकान एयरपोर्ट रोड़ पर है। घर के सामने थोड़ी खुली जगह है फिर सड़क है जो एयरपोर्ट को जाती है। उनके मकान पर एक दिन पहले ही राकेट से हमला हुआ। राकेट से खिड़की टूटी, दीवार में एक गड्डा पड़ गया, शीशे टूटे मगर परिवार में किसी को चोट नहीं आई। श्री सैयद शाह जीलानी उस समय दिल्ली गए हुए थे। वहां उनकी बेटी का इलाज़ चल रहा है। बेटी पिछले हमले के समय सदमे के कारण बीमार है। उसका दिल्ली में इलाज चल रहा है।

हजरत बल

कुछ दिन पूर्व हजरतबल दरगाह में कुछ हथियार बंद जम्मूकश्मीर लिबरेशन फ्रंट के लोग घुस गए। फ्रंट के स्वयंभू कमांडर इन चीफ बशारत रज़ा के साथ १७ लोग दरगाह में हथियारों सहित घुस गए थे। मुठभेड़ में बशारत रज़ा एवं अन्य सात, साथ ही एक पुलिस उपनिरीक्षक अमानुल्ला भी मारा गया। तीन दिन बाद पुलिस से बातचीत के बाद हजरत बल दरगाह से शेष लोग निकलकर पास की इमारत में चले गए। इस घटना के बाद हड़ताल खुलने वाली थी मगर श्री जलील अंदराबी की लाश मिलने के कारण हड़ताल जारी रही। इस प्रकार २७–२८ मार्च को भी हड़ताल रही। २८ मार्च को ईदगाह जाते समय एक स्थान पर सड़क रोक दी गई और हमें रास्ता बदलकर जाना पड़ा। बाद में जानकारी मिली की गोलीबारी की घटना के कारण रास्ता रोका गया था।

श्रीगांधी आश्रम

ईदगाह से लौटते समय श्रीगांधी आश्रम में रूके। वहां के कार्यकर्ताओं से बातचीत की। श्री विश्वनाथ भारद्वाज से भी बातचीत हुई। श्रीगांधी आश्रम में १९६० में ही एक विस्फोट हुआ जिसमें किसी कार्यकर्ता को चोट नहीं आई। इमारत को नुकसान हुआ। विस्फोट के बाद दहशत, डर फैलना स्वाभाविक था फिर भी कार्यकर्ताओं ने हिम्मत से काम लिया तथा तय किया कि वे यहीं रहकर कार्य करेंगे। कार्यकर्ताओं ने श्रीगांधी आश्रम की ओर से समाचार पत्रों को लिखा और बताया कि श्रीगांधी आश्रम एक संस्था है जो गांधी विचार पर कार्य करती है। एक स्वैच्छिक संस्था है। कत्तिनों, बुनकरों के मध्य कार्य करती है और सैकड़ों लोगो को रोजगार के अवसर प्रदान करती है। समाचार पत्रों में

ऐसा छपने पर कुछ लोग पूछताछ करने भी आए कि आपका सचमुच काम ऐसा ही है क्या? श्रीगांधी आश्रम को उसके बाद कोई कठिनाई नहीं हुई। कार्यकताओं ने हिम्मत दिखाई, साहस किया तो उसका नतीजा निकला कि आज भी ८० लाख की बिक्री हो रही है। उसी प्रकार से लोगों को काम मिल रहा है। श्रीगांधी आश्रम के कार्यकर्ताओं का साहस, सक्रियता, विश्वास देखकर उत्साह बढ़ा। हिंसा, तनाव के माहौल में भी खादी के रचनात्मक काम को, उत्पादन को जारी रखा। सभी कार्यकर्ता धन्यवाद के पात्र हैं। संकट में भी कार्य को जारी रखकर सैकड़ों लोगों को काम का अवसर दे रखा है। उन्हें बेरोजगार होने से बचाया है।

तनाव में भी जीवन

श्रीगांधी आश्रम में ही बैठे बात कर रहे थे कि गोलीबारी की आवाज़ सुनाई दी, दोपहर का समय होगा डेढ़ या दो बजे का, कई आवाजें आई। साथियों ने बताया कि पहले यह आवाजें कभी कभी, किसी भी समय, कहीं से भी आने लगती थी मगर अब कुछ समय से यह आवाजें कम हुई हैं। पहले से माहौल में बहुत अन्तर आया है। आज की स्थिति को भी हम अच्छा नहीं मान सकते मगर फिर भी पहले के मुकाबले अभी स्थिति में कुछ सुधार आया है, ऐसा अधिकतर लोगों का मानना था। हमने भी देखा कि हड़ताल के बावजूद अनेक जगह जीवन दिखता था। बच्चे जगह जगह सड़क पर क्रिकेट खेलते नज़र आये। शहर के हर कोने में सड़को पर बच्चे, युवा महिला–पुरुष आदि आते जाते देखे जा सकते हैं। अनेक स्थानों पर महिलाओं को भी आते जाते देखा गया। जीवन की आवश्यक वस्तुएं पटरियों पर बिक रही थी। फल सब्जी, खाने की वस्तुएं। यह जरूरी भी है।

दिन में सैनिक बल बढ़ा दिया जाता है। शाम के बाद आना जाना कम हो जाता है। बहुत कम लोग शाम के बाद निकलते हैं। हम लोग पैदल भी घूमे। कोई–कोई वाहन भी आते जाते रहता है। वाहन कम ही सड़क पर देखे। फौजी वाहनों का आवागमन बहुत है। एक साथ कतारबद्ध, तो कभी एक दो, कभी अकेला वाहन। हर वाहन में हथियार से लैश जवान तैयार रहते हैं, लगभग हर वाहन में एक दो जवान तो हथियार ताने ही खड़े रहते हैं।

रात से ज्यादा दिन में जवान सड़कों पर नजर आते हैं। बैरक, पहरे पर खड़े जवान, बड़ी संख्या में वाहनों का आवागमन एक अलग प्रकार का माहौल बनाता है। जम्मू कश्मीर पुलिस के जवान भी नजर आते हैं। अभी घाटी में तनाव है। नागरिक प्रशासन को सक्रिय करना, पुलिस को और अधिक प्रभावी बनाना सेना की उपस्थिति को कम करना आवश्यक लगता है।

पैदल घूमने के कारण साधारण लोगों से बातचीत का अच्छा अवसर मिला। करनाल के श्री जंग बहादुर सिंह झेलम के किनारे पुल के पास चाबी, ताले का काम करते हैं। यह लोग कई माह के लिए कश्मीर आते हैं। दर्जनों लोग अलग–अलग जगह बैठते हैं। इन्होंने स्थायी रूप से कमरा ले रखा है और हर साल कुछ माह कश्मीर में रहते हैं। इनका मानना है कि पहले से बहुत ज्यादा सुधार स्थिति में हुआ है। हड़तालों में कमी हुई है, गोलीबारी की घटनायें कम हुई हैं, लोग पहले से राहत महसूस करते हैं। स्थिति में सुधार की गुंजाईश बहुत है। लोगों को इस माहौल को सहन करने की आदत भी पड़ गई लगती है। लोगों ने इस माहौल में जीना सीख लिया है।

रोजगार की तलाश

कश्मीर में पर्यटन एक बड़ा धन्धा है। पर्यटन के चारों ओर बड़ी तादाद में लोगों का रोजगार जुड़ा है। हिंसा, तनाव के माहौल में पर्यटन एकदम चौपट हो गया है। झेलम के किनारे खड़ी हाऊस बोट की कतारें पर्यटकों का लम्बे समय से इंतजार कर रही हैं। हम लोग हाऊस बोट की ओर मुड़े। किनारे पर ही उनके निवास हैं। एक महिला जो घरेलू कार्य में व्यस्त थी हमने आवाज दी सहज मुस्कान के साथ हमारा स्वागत हुआ और हम मिले एक युवा साथी दसवीं कक्षा के छात्र श्री शब्बीर से। शब्बीर से बातचीत हुई। बातचीत में स्पष्ट रूप से आशा झलक रही थी। जब हमने हाऊस बोट के बारे में जानकारी चाही कि अगर हम एकटोली लेकर आए तो हमें हाऊस बोट उपलब्ध होगी क्या? सुनते ही उत्साह के साथ अपने भाई जान श्री गुलाम मयूद्दीन (मट्टू) को बुलाया। फिर विस्तार से चर्चा हुई। इस माहौल के कारण पर्यटक आता नहीं है। लाखों रुपये लगाकर बनाई गई बोट आज लम्बे समय से बेकार खड़ी है। इनकी देखभाल भी ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे हैं। न जाने कब समय बदलेगा? "ऊपर वाला ठीक करेगा"। बातचीत में आशा की झलक स्पष्ट नजर आई। माहौल बदलेगा, फिर घाटी में अमन चैन का जीवन होगा। वे उस समय की याद करते हैं कि जब जीवन कितना व्यस्त था, रौनक रहती थी आवागमन, चहल–पहल का माहौल। वे खुशियां फिर जल्दी ही शुरू होगी इस आशा में यह लोग बैठे हैं।

हम लोग घूमते घूमते आगे बढ़े, दो युवा साथी झेलम के किनारे बनी छोटी दिवार पर बैठे थे। हम भी पास जाकर बैठ गए तथा बातचीत प्रारंभ हुई। दोनों ही व्यापार में लगे हैं एक

इलेक्ट्रोनिक के तथा दूसरा रेडीमेड के काम में लगा है। व्यापार में अन्तर तो पड़ा ही है फिर भी जीवन चला रहे हैं। अभी माहौल में अन्तर आ रहा है। हम बातचीत में लीन थे। हमारे से कुछ दूरी पर सामने की ओर सैन्यबल का ठिकाना था दूसरी मंजिल में दो–तीन जवान हमें लगातार देख रहे हैं। लगभग पन्द्रह मिनट बाद उन्होंने एक राहगीर से कहा कि हम यहां से हट जाए। हम लोग चल पड़े जब उनके समीप पहुंचे तो उन्होंने हमारी जानकारी चाही कहां से आए है, कौन है? और बातचीत में ही कहा कि "तुम्हारी दिल्ली की बिल्ली बना देंगे ये लोग यहां से चले जाओ"। हम होटल की ओर बढ़ गए। अंधेरा बढ़ता जा रहा था।

घाटी में वापसी

टोली श्री रतनलाल टिक्कू खादी कार्यकर्ता से मिली। यह घाटी से चले गए थे। मगर वापस आ गए उनका घर सुरक्षित है। कभी कभी घर जाते हैं। अभी श्री गांधी आश्रम में ही रहते हैं। कश्मीर में जनता से जनता का झगड़ा नहीं रहा। जनता आज भी साथ मिलकर रहना चाहती है। कुछ लोगों का छोड़कर सब भाई चारे के साथ रहना चाहते हैं। श्री रतनलाल टिक्कू अकेले वापस आए हैं परिवार अभी बाहर है वे फतेह कदल मौहल्ले में रहते थे। जब मौहल्ले वालों को जानकारी हुई तथा हज जाने के लिए कार्यक्रम बना तो इन्हें भी मौहल्ले वालों ने बुलाया। पास पड़ौस के लोग खूब उत्साह से मिले। कुछ लोग गले मिलकर रोये। सभी ने वापिस आकर रहने का आग्रह किया। कुछ अन्य लोगों से भी मिलने का अवसर मिला जो घाटी में वापस आए हैं।

संवाद की चाह

कश्मीर में देश के अन्य हिस्सों से भी लोग आ जा नहीं रहे हैं। कश्मीर की एक तरफा तस्वीर ही जनता के सामने आ पा रही है। कश्मीर की जनता से देश की शेष जनता का ज्यादा गहरा, समीप का रिश्ता बनना चाहिए। कश्मीर की जनता से जनता के स्तर पर संपर्क, संवाद प्रारंभ हो जो दिलों को जोड़ेगा, नफरत मिटायेगा, द्वेष कम करेगा। एक दूसरे को समझने, सोचने, जानने का अवसर मिलेगा। लोग जुड़ेंगे, समझेंगे तो एकता, भाईचारा बढ़ेगा। घाटी में पंजाबी लोगों की उपस्थिति एक अच्छा प्रतीक है। आशा की किरण है। माहौल में परिवर्तन करके शीघ्र से शीघ्र सभी कश्मीरी लोग वापस अपने घरों में जाकर रहें। लोगों की वापसी ही खाई को भरपाएगी। सामान्य स्थिति के लिए यह जरूरी है तो इस स्थिति के लिए सामान्य स्थिति का होना जरूरी है।

दहशत हटे

जिस भी युवा साथी को एक बार भी सैन्यबलों द्वारा जांच एवं पूछताछ के लिए हिरासत या जांच पड़ताल केन्द्र ले जाया जाता है, उसके साथ जो व्यवहार होता है उससे उसके मन में सेना एवं भारत के विरुद्ध एक नफरत पैदा हो जाती है। कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार वह नफरत, दुःख बातचीत में झलकता है। घाटी में इस प्रकार के अनेक जांच पड़ताल केन्द्र अलग–अलग सैन्य बलों द्वारा चलाए जा रहे हैं।

विश्व विद्यालय के बाहर से इसी माह १७ मार्च को श्री तारिक अब्दुल्ला, उम्र २७ वर्ष, सुपुत्र श्री मोहम्मद अब्दुल्ला क्वॉटर नं १३ विश्व विद्यालय परिसर, हजरतबल, श्रीनगर को पकड़ा गया।

श्री तारिक को, कश्मीर प्रशासनिक सेवा की परीक्षा के दौरान पकड़ा। रेडियो कश्मीर के लिए कभी–कभी कार्य करते हैं। मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार में एक प्रोजेक्ट "जम्मू–कश्मीर में बच्चों का भविष्य" में काम किया है। अभी भाषा विभाग में छात्र हैं। विशेष टास्क फोर्स द्वारा रिगल चौक, एस. पी. कॉलेज के सामने से इन्हें उठाया गया है। बताया गया कि विश्व–विद्यालय के अधिकारी छात्र के सम्बन्ध में गारण्टी देने को तैयार हैं तथा मानते हैं कि छात्र का चरित्र, जीवन व्यवहार बहुत अच्छा रहा है। फिर भी अभी तक इसका लाभ भी तारिक को नहीं मिला है।

आज घाटी में एक ओर सैनिक बल है तो दूसरी ओर आतंकवादी। आम जनता मध्य में फंसी है। चाहे आतंकवादियों का दबाव हो या सैन्य बलों का, पिस रही है निरीह जनता। दहशत के कारण किसी के विरूद्ध बोलना भी कठिन महसूस करती है। अपने दिल की बात वह दोनों से नहीं कह सकती। कश्मीर की जनता महसूस करती है "न खुदा ही मिला न विशाले सनम, न ईधर के रहे न उधर के रहे"। कश्मीरी लोग अमन चैन पसन्द हैं आज वे डरे खड़े हैं। इंतजार है अमन चैन का।

चुनाव की घोषणा

चुनाव की घोषणा के बाद घाटी में फिर तनाव बढ़ा है। कुछ दलों एवं लोगों ने चुनाव का बहिष्कार किया है। कुछ दल एवं लोग चुनाव में भागीदारी करना चाहते हैं। इस विषय पर पूछने पर अलग अलग प्रतिक्रया सामने आती है। राजनैतिक प्रक्रिया से जुड़े राजनैतिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि घाटी में आज तक चुनाव निष्पक्ष, साफ–सुथरे नहीं हुए जिससे चिंता होती है। चुनाव

में धांधली की जाती है। इन चुनाव प्रक्रिया में भारत सरकार की भूमिका भी संदिग्ध रही है। सोच समझकर चुनाव के परिणाम भी बदलने के आरोप लगाए जाते हैं। किसी दल विशेष के पक्ष में चुनाव का रूख बदलने के लिए गैरकानूनी कदम भी उठाए गए हैं। विरोधियों के साथ बदले की भावना से कारवाईयां की गई जिनसे दुखी, प्रताडित होकर अनेक लोगों का इस चुनाव प्रक्रिया से विश्वास टूटा है। निष्पक्ष, स्पष्ट, साफ सुथरा चुनाव हो तो लोगों को भागीदारी बढ़ेगी, लोगों का विश्वास जगेगा। एक ओर बातचीत का दौर चलाया जाता है और दूसरी और चुनाव की घोषणा कर दी जाती है। यह सरकार का गलत कदम है। सरकार को बातचीत से कुछ निकालने का प्रयास करना चाहिए था। चुनाव की घोषणा एवं बहिष्कार से घाटी में तनाव बढ़ा है। हिंसा की संभावनाएं बढ़ी है। प्रजातांत्रिक प्रक्रिया के लिए चुनाव एक माध्यम है मगर कश्मीर में इस बारें में और संवाद, बहस, चर्चा की जरूरत है। हजारों लोग हिरासत में हैं। सैन्य बलों की भारी उपस्थिति में चुनाव का होना एक मजाक बन जायेगा। इसका समाधान क्या है? यह पूछने पर स्पष्ट उत्तर नहीं मिल पाता है।

अनुपस्थित नेतृत्व

घाटी में राजनैतिक नेतृत्व की कमी एक बड़ी समस्या है। आज कश्मीर में कोई भी दल यह नहीं कह सकता कि उसकी पकड़ जनता पर है। हो भी क्यों ? कोई नेता सात समुद्र पार से नेतृत्व संभालने की इच्छा रखता है, तो कोई दिल्ली से या अन्य स्थान से। जनता के मध्य, जनता के साथ रहने वाला, उनके दुःख का भागीदार बनने वाला, उनके हर रोज के कामों से जुड़ने वाला, उनके साथ जीवन जीने वाला, उनकी बात कहने सुनने वाला नेतृत्व कहां है ? बिना ऐसे नेतृत्व के जनता कैसे विश्वास

करे? आज घाटी को सही नेतृत्व की आवश्यकता है। जो सही ढंग से जनहित में जनता का प्रतिनिधित्व कर सके। ऐसा नेतृत्व उभरते ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया घाटी में प्रारंभ होगी तथा समस्यायें कम हो सकती हैं। लोगों को सही प्रतिनिधि चुनने का अधिकार लोकतंत्र में जरूरी है। कश्मीर में "अनुपस्थित नेता" हैं। जो दूसरे के माध्यम से नेतृत्व संभालना चाहते हैं। कश्मीर की संस्कृति, तहजीब प्रेरणा, भावना को समझे बगैर नेतृत्व नहीं किया जा सकता।

प्रचार माध्यम

प्रजातंत्र में अभिव्यक्ति की आज़ादी एक बड़ा मुद्दा है। जनता की आवाज एक अहम प्रश्न है। इस आवाज को उठाने की जुम्मेवारी प्रचार साधन–समाचार पत्र–पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन आदि पर है। प्रजातंत्र में प्रचार–माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। कश्मीर एवं कश्मीर के बाहर पूरे देश में प्रचार माध्यमों की भूमिका अलग अलग रही है।

कश्मीर में प्रचार माध्यमों ने अपनी बात रखी मगर उन्हें हिंसा, दबाव का शिकार होना पड़ा। आतंक, प्रतिआतंक एवं सेना तीनों के दबाव का मुकाबला वहां प्रचार माध्यमों को करना पड़ा है। अनेक पत्रकार इसके शिकार भी हुए हैं। उन पर हमले, दबाव, प्रताड़ना की कारवाईयां हुई हैं। फिर भी कश्मीर के समाचार पत्र कुछ आवाज उठाते रहे हैं। कश्मीर के बाहर प्रचार माध्यमों की भूमिका एकदम अलग रही है। कश्मीर की आवाज को सशक्त ढंग से नहीं उठाया गया है। वहां की विस्तृत जानकारी नहीं रखी गई। प्रचार माध्यमों ने बहुत ही कम जानकारी कश्मीर के बारे में दी है और जो जानकारी दी है वह भी निष्पक्ष होकर नहीं

दी गई ऐसा पत्रकार साथियों का मानना है। कश्मीर प्रचार माध्यमों का मुद्दा ही नहीं बन पाया। जो समाचार दिए भी गए उनमें बहुल सरकारी पक्ष का ज्यादा रहा। कश्मीर की सही जानकारी देश के सामने नहीं रखी जा सकी जिसमें आम जनता भ्रम में रही है।

नागरिक भागीदारी

जम्मू कश्मीर की जनता को विश्वास में नहीं लिया जा सका। जिससे अन्य ताकतों ने भी फायदा उठाया है। सीमा क्षेत्र के कारण पाकिस्तान भी सक्रिय है। पाकिस्तान बदले की भावना से कारवाई कर रहा है। सीमा पर ज्यादा सावधानी बरती जानी चाहिए मगर नागरिकों को विश्वास में लेकर उनकी सुरक्षा समितियां बनाई जा सकती है। जो अपने गांव–क्षेत्र के बारे में सावधानी बरतें और नागरिक प्रशासन को सहयोग करें। नागरिक की भागीदारी, साझेदारी सुनिश्चित होने पर वह ज्यादा जुम्मेवारी महसूस करेगा।

हिंसा से कोई मसला हल नहीं होता

हिंसा से लोग दुःखी हुए हैं। अब हिंसा से पीछा छुड़ाना चाहते हैं। हिंसा से मनचाहे परिणाम प्राप्त नहीं हो सकते यह बात समझ आने लगी है। हिंसा, गोलीबारी, कत्ल का रास्ता स्थायी हल नहीं है। हिंसा, प्रतिहिंसा, के कारण माहौल तनावपूर्ण रहता है, अविश्वास बढ़ता है। हिंसा की सीमाएं समझ आने लगी है। हजारों नौजवानों को खोया जा चुका है। बहुत हुआ अब और खून नहीं बहना चाहिए। हिंसा का रास्ता हर तरफ से बंद होना चाहिए।

अनिश्चितता के मध्य

२६ मार्च की सुबह वर्षा हो रही है। सुबह ७ बजे से पहले होटल अहदूस से बस पकड़ने के लिए निकले। आजकल बस में भीड़ नहीं रहती, आराम से बस मिल जाती है। होटल के पास सड़क पर बस मिलती है। हम लोग ही मात्र सवारी थे, बस ने घूम कर सवारियां एकत्र की। श्रीनगर चुंगी पर पहुंचे, सभी वाहनों को इधर उधर लगाने को कहा जा रहा था। अभी यातायात खोला नहीं जा रहा था। निश्चित समय भी नहीं बताया जा रहा था। स्थानीय वाहन एवं सुरक्षा बलों के वाहन आ जा रहे थे। एक सैनिक किसी भी वाहन को वहां रूकने नहीं दे रहा था। हमारा ड्राईवर कभी गाड़ी को एक ओर खड़ी करता था कभी दूसरी ओर। इस प्रकार घंटो आंख–मिचौली चलती रही। पहले सुना जा रहा था कि ६ बजे के आस पास रास्ता खोलेंगे। जब इस समय रास्ता नहीं खुला तो तो बस वापस शहर की ओर चल पड़ी। शहर में पहुंचकर फिर बस चुंगी की ओर चल पड़ी। बस चुंगी से बारामूला जाने वाली सड़क पर गई, पुल से वापस मोड़कर बारामूला सड़क पर ही किनारेपर बस खड़ी कर दी। सवारियां इधर उधर घूमने लगी। लगभग हर १०–१५ मिनट बाद सैनिक वाहनों का जत्था हमें पार करता कभी एक ओर से, कभी दूसरी ओर से। हम खड़े थे, सुबह ७ से ११ बज गए हैं हमारी बस चुंगी से आगे नहीं बढ़ी। आजकल कश्मीर घाटी के विकास की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है।

अचानक ११.३० बजे चुंगी पर हलचल नजर आई सवारियां खुशी से अपने अपने वाहनों की ओर दौड़ पड़ी। रास्ता खोल दिया गया है। हर ड्राईवर चाहता है कि वह गाड़ी आगे ले जाए। बस, कार, ट्रक सब आगे बढ़ने के प्रयास में हैं। कही कहीं सैनिक वाहनों का जत्था आता है। गति मंद पड़ जाती है, कुछ स्थानों

पर तो रुकना भी पड़ा। वर्षा के कारण सड़क भी खराब है, कुछ जगह सड़क टूट गई, धंस गई है। दोपहर के बाद का समय, किसी तरह ट्रकों की लम्बी कतार को पार कर हमारी बस गुफा की और बढ़ती है मगर गुफा से दूर ही रुकना पड़ता है। घनघोर बादल छाए हैं, बिजली चमक रही है, कभी कभी बादल की गर्जना भी हो रही है। वर्षा शुरू, सामने बर्फीली पहाड़ियां नजर आ रहीं हैं। कुछ बच्चे एवं युवा मूंगफली, बिस्कुट आदि बेच रहे हैं। वाहनों की कतार बढ़ती जा रही है। वर्षा के साथ–साथ ओलावृष्टि भी शुरू हुई, रुक रुककर कई बार ओले पड़े। बस खड़ी है। वर्षा, ओला, बादल की गर्जना के स्वर सुन रहे हैं। ठण्डी हवा शरीर पर कपड़ों की संख्या बढ़ने लगी। गुफा खुलने का कोई संकेत नहीं। यहां छोटी सी चाय की दुकान दिख रही है, वहां लोगों की भीड़ है। सबको चाय भी नहीं मिल पा रही है। किसी ने भी दोपहर का भोजन भी नहीं किया। गुफा को जल्दी से जल्दी पार कर लें इस भागदौड़ में चाय, खाने के लिए बस को नहीं रोका गया। श्रीनगर से चले लगभग ८ घंटे हो गए हैं और अभी तक १०० कि.मी के लगभग दूरी तय नहीं की है। कब चलेंगे, कब पहुंचेगे, कहां रुकेंगे कुछ नहीं मालूम ? इंतजार के बाद बस चली पुलिस ने बस रोकी, जांच हुई, बस चल पड़ी। रुकते चलते आखिर गुफा के द्वार के पास पहुंच गए। वाहन जा रहे थे, गुफा का द्वार खुल गया था। हमारी बस को फिर जांच के लिए किनारे लगा दिया गया। वर्षा की बूंदे गिर रही हैं स्थानीय पुलिस एवं केन्द्रीय सुरक्षा बल पुलिस का जवान खड़ा है। सारी सवारियां अपना अपना हैण्ड बैग लेकर नीचे उतरी। पुलिस वाले ने कहा वर्षा हो रही है। जल्दी जल्दी जांच की जाए तो केन्द्रीय पुलिस बल का जवान गुस्सा हो गया और उसने जांच थोड़ा धीमा करते हुए अनेक बातें गुस्से में बोली" कि एक मिनट में बता दूंगा", "क्या समझता है अपने आपको", "सीधा कर दूंगा", सबकी जांच

के बाद बस चली। गुफा पार कर ली थी मगर दिन भी लगभग पार होने जा रहा था।

इंतजार बना एक अवसर

बनीहाल पहुंचे। बस रुकी सब लोग भोजन के लिए पहुंचे। सभी दुकानों में भीड़ है। भोजन में किसी का नम्बर नहीं आ रहा है। जिसके जो हाथ लग रहा है वही लेकर खाने के प्रयास में है। सबको जल्दी है कि जितना जल्दी आगे बढ़े अच्छा हो। सबने बहुत ही जल्दी जो मिला भोजन कर बसमें आकर बैठ गए। बस खड़ी है "बस" खड़ी है। धीरे–धीरे शाम गहराने लगी रास्ता फिर बंद है। मालूम हुआ कि रात को रास्ता नहीं खुलेगा। अब बनीहाल ही रुकना है। हर व्यक्ति रात गुजारने की व्यवस्था में लग गया कोई हॉटल में, कोई गेस्ट हाऊस में। हमने पहले पूछा तो सरकारी गेस्टहाऊस पूरा खाली था अब गए तो मालूम हुआ कि तीन हॉल भर गए है मात्र एक खाली है। हम लोगों ने पांच पंलग लिए तथा पांच पंलग कुछ और नौजवान साथियों ने लिए। इस प्रकार हॉल में हम दस लोग थे, सभी युवा साथी। चर्चा चल रही थी सबने दिल खोलकर बातचीत की अपने–अपने अनुभव विचारों का आदान प्रदान हुआ। कभी कभी मध्य में विचारों में मतभेद के कारण आवाज तेज भी हो जाती थी। स्थानीय साथी आपस में कुछ बातों पर एक दूसरे से सहमत नहीं थे। सोने से पहले छोटा सा संगीत कार्यक्रम भी हुआ।

३० मार्च, बनीहाल में सुबह हुई। श्रीनगर से चले २४ घंटे हो गए हैं। मौसम खुला है। वर्षा बंद हो गई है। धूप निकलने के आसार नजर आते हैं। रास्ता खुलेगा ऐसी उम्मीद है। समय दौड़ रहा है मगर बस खड़ी है। लम्बी कतार में वाहन इंतजार कर रहे हैं। कुछ वाहन गुफा पार करके यहां रुके हैं तो अनेक वाहन तो अभी गुफा के पार ही इंतजार कर रहे हैं। ड्राईवर ने

८ बजे के बाद बस को आगे बढ़ाया। कतार लगी है बस आगे जा रही है एक जगह रास्ता जाम सा हो गया। वाहन ही वाहन,। कुछ सवारी कह रही हैं इस तरह बस को आगे नहीं लाना चाहिए रास्ता जाम हो जाएगा सब निकल जाएंगे और हम यही फंसे रह जायेंगे, कुछ कह रहे हैं कि आगे बढ़ना चाहिए रास्ता खुलते ही हम कुछ आगे निकल जायेंगे। इसी उधेड़ बुन में कभी रुकना, कभी चलना, कभी साईड लेना और अंत में यहां से भी आगे बढ़े रास्ता खुला और हम शाम को जम्मू पहुँचे। ३० को जम्मू से दिल्ली के लिए गाड़ी द्वारा चलें। अनुभव से ओत प्रोत रही यह यात्रा।

अरुणोदय जरूर होगा - कुछ सुझाव

- जो युवा साथी एवं अन्य लोग जिन पर अभी तक कोई अपराधी मामले दर्ज नहीं हैं उन्हें तुरन्त रिहा करना चाहिए। जिन पर कुछ मामले दर्ज हैं उन पर तुरन्त न्यायिक कार्रवाई प्रारंभ की जाए। इस कारवाई से माहौल में बदलाव आयेगा।
- तलाशी की कारवाई रोकी जाए। किन्हीं विशेष स्थितियों में तलाशी करनी भी पड़े तो महिला अधिकारी, नागरिक अधिकारी साथ हो तथा जनता को विश्वास में लिया जाए। उनके सम्मान की रक्षा की जाए। प्रयास हो कि किसी की पहचान "स्व" को चोट ना लगे। बदले की भावना से कोई कारवाई न की जाए। गलती से किसी का नुकसान हो भी जाए तो उसे स्वीकार करने का साहस दिखाना चाहिए तथा उसकी क्षतिपूर्ण की जाए।
- नागरिक प्रशासन को तुरन्त सक्रिय किया जाए। नागरिक प्रशासन से जनता में विश्वास पैदा होगा। स्थिति सामान्य होने में सुविधा होगी। आज जो स्थिति कुछ सुधरी है उसमें और सुधार आ पायेगी।

- सेना को जितना जल्दी हो हटाया जाए। पुलिस को सक्रिय एवं प्रभावी बनाया जाए।
- जम्मू कश्मीर के लोगों से व्यापक तौर पर संवाद शुरू किया जाए। आपसी बातचीत का माहौल बनाया जाए और हर तरह से उनके दिल जीतने का प्रयास हो।
- लोकतांत्रिक शक्तियों को मान्यता दी जाए तथा इन शक्तियों, साधनों में विश्वास पैदा किया जाए।
- देश के जागरूक नागरिक कश्मीर में बड़ी संख्या में जावें साथ ही कश्मीर के युवाओं को भी देश के अन्य भागों से परिचित कराना चाहिए।
- जम्मू कश्मीर की सही जानकारी लोगों को होनी चाहिए। इसके लिए जम्मू कश्मीर के मुद्दे पर देश भर में चर्चा, बैठक, कार्यक्रम, बहस होनी चाहिए।
- नागरिक सुरक्षा समितियों का निर्माण किया जा सकता है।
- रोजगार के ज्यादा अवसर पैदा किए जाएं।
- स्वयंसेवी संस्थाओं, कार्यकर्ताओं, जागरूक नागरिकों की वातावरण सामान्य बनानें में अहम भूमिका है। उन्हें जम्मू कश्मीर पर अधिक सक्रिय होना होगा।
- घाटी छोड़ने वाले लोगों की वापसी घाटी के माहौल को अच्छा बना सकती है। ऐसे प्रयास चारों ओर से किए जाए जिससे लोग वापस घाटी में जा सकें। हिंसा (किसी की ओर से हो) को तुरन्त रोका जाए तथा हिंसक कारवाईयों का जबर्दस्त विरोध हो।
- शांतिमय एवं लोकतांत्रिक ढंग से बात रखने के अधिकार को पूर्ण सुरक्षा एवं सम्मान दिया जाए। लोगों में विश्वास जगना चाहिए कि शांतिमय ढंग से कही बातों, मुद्दों की आवाज को मान्यता है, उन्हें सुना जा रहा है।

- सेना, पुलिस , एवं अन्य अधिकारी व्यवहार कुशलता, आपसी विश्वास का विशेष ध्यान रखें।
- देश में कश्मीर पर " नागरिक पहल" की नितान्त जरूरत है।

कुछ सवाल जो अक्सर लोगों के सामने हैं :

- क्या सेना के दम पर स्थायी शांति की स्थापना एंव समस्या का समाधान संभव एवं उपयोगी है?
- क्या घाटी के युवा हिंसा से रास्ता खोज पायेगें? कश्मीरियत की सुरक्षा हिंसा के बल पर हो सकती है क्या?
- कश्मीर घाटी पीड़ित क्यों है? इसकी सही समस्या क्या है?
- आजादी की लड़ाई में साथ जुझने वाले भी आज देशद्रोही कैसे कहलाने लगे?
- हजारों युवकों की मौत क्या देश का भारी नुकसान नहीं है?
- भारत–पाकिस्तान के नेताओं के अपने स्वार्थ, अपनी नेता गीरी, जनप्रियता के लिए क्या कश्मीर को मुद्दा बनाकर कश्मीर के साथ खिलवाड़ नहीं किया जा रहा है?
- शेष देश ने जम्मू कश्मीर को क्यों नहीं समझा, जाना?
- भावना के साथ–साथ व्यावहारिक दृष्टिकोण से विचार क्यों नहीं किया जा रहा है?
- जम्मू कश्मीर का दिल जीतने के लिए क्या पर्याप्त काम हुए हैं?
- जम्मू कश्मीर के बिना भारत के बारे में सोचिए क्या वह इतना सुंदर रहेगा?

अक्तूबर ६५ में वरिष्ठ साथियों के अध्ययन दल के बाद निम्न कार्य किए गए :

- गांधी शांति प्रतिष्ठान में कश्मीर मुद्दे पर चर्चा, विचार विमर्श के लिए कई बैठकें आयोजित की गई।
- प्रस्तावित सद्भावना यात्रा के संबंध में अन्य लोगों से भी बैठकें की गईं।
- हुरियत कांफ्रेस दफ्तर से संपर्क कर जानकारी प्राप्त की गई।
- प्रतिष्ठान ने कश्मीर पर समाचार कतरने, रपटें आंकड़े, पुस्तकें आदि एकत्र की हैं। जो रुचि रखते हों उन्हें सूचना उपलब्ध करवाई जा सकती है।
- अध्ययन दल की रपट हिन्दी एवं अंग्रेजी में छपवाई गई है। तथा उसे चुने हुए लोगों, संस्थाओं, कार्यकर्ताओं, संगठनों को भेजा गया है।
- हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू में रपट जम्मू–कश्मीर के तथा अन्य समाचार पत्रों को पहुंचाई गई है।
- प्रधानमंत्री कार्यालय को संक्षिप्त रपट भेजी गई।
- चुनाव आयोग कार्यालय को भी विस्तृत एवं मुद्देवार जानकारी भेजी है।
- अनेक समाचार पत्रों ने अध्ययन दल की जानकारी प्रकाशित की है।

बढ़ते कदम.....

- जम्मू कश्मीर के मुद्दों को दिल्ली में विभिन्न स्तरों पर उठाना।
- घाटी में रचनात्मक कार्य की सम्भावनाओं की तलाश विभिन्न संगठनों के साथ।
- रचनात्मक, जागरूक युवा साथियों की भागीदारी शांति प्रयासों हेतु

कृपया सहयोग एवं जानकारी के लिये सम्पर्क करें-

रमेश शर्मा
युवा विभाग,
गांधी शांति प्रतिष्ठान,
२२३ दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली – ११० ००२
फोन : ३२३७४६१, ३२३७४६३
फैक्स : ३२३६७३४
तार : सत्याग्रह, नई दिल्ली – ११० ००२